ISSN: 2393-8900 IMPACT FACTOR : 2.7825(UIF) VOLUME - 11 | ISSUE - 7 | MARCH - 2025

HISTORICITY RESEARCH JOURNAL

भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में मातंगिनी हाजराजी का योगदान

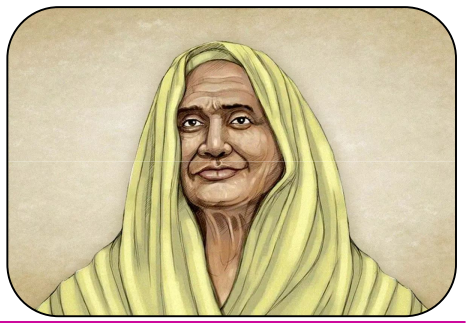

डॉ.धनाराम उइके
सहायक प्राध्यापक (इतिहास)
शासकीय पेंचव्हिल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, परासिया (मध्यप्रदेश)

सारांश:

भारत की स्वतंत्रता आंदोलन की लढाई के इतिहास में अक्सर छाया में रहने वाली मातंगिनी हाजरा, ऐतिहासिक छाया से निकलकर एक ऐसी दुर्जेय शख्सियत के रूप में उभरी हैं, जिनकी जीवन कहानी एक राष्ट्र की स्वतंत्रता की खोज की बड़ी कहानी में जटिल रूप से बुनी गई है। इतिहास के गलियारों में गूंजती भारत की स्वतंत्रता की पुकार मातंगिनी हाजराके जीवन में गूंजती रही। महात्मा गांधी के अहिंसक प्रतिरोध के दर्शन से गहराई से प्रभावित होकर, वह सविनय अवज्ञा आंदोलन में सक्रिय भागीदार बन गईं। अपने जीवन के इस चरण में उन्होंने अन्य स्वतंत्रता सेनानियों के साथ मिलकर अन्यायपूर्ण कानूनों के खिलाफ प्रतिरोध की भावना को मूर्त रूप दिया। मातंगिनी की कहानी उनके व्यक्तिगत योगदान से परे है; यह स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की अक्सर अनदेखी की जाने वाली भूमिका का प्रतीक बन जाती है। सामाजिक अपेक्षाओं से मुक्त होकर, उन्होंने उन अनगिनत महिलाओं की ताकत और दृढ़ संकल्प का उदाहरण दिया, जिन्होंने एक राष्ट्र के भाग्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मातंगिनी हाजराजी के जीवन की जांच करते हुए, यह शोध पत्र उनके योगदान की गहराई को उजागर करना चाहता है।

परिचय:

भारत के राष्ट्रीय नेताओं से परामर्श किए बिना, ब्रिटिश सरकार ने १९३९ में देश को द्वितीय विश्व युद्ध में घसीटा। इसके अलावा, मार्च १९४२ में क्रिप्स मिशन की विफलता ने कांग्रेस के रुख में एक महत्वपूर्ण बदलाव किया। १९४२ में राष्ट्रवादी आंदोलन में गांधी के नेतृत्व का उद्घाटन ब्रिटिश नियंत्रण से स्वतंत्रता के लिए भारत के संघर्ष में एक महत्वपूर्ण क्षण था। कांग्रेस कार्य समिति ने १४ जुलाई को 'भारत छोड़ो प्रस्ताव'को मंजूरी दी और कांग्रेस नेताओं ने ८ अगस्त को बॉम्बे में 'भारत छोड़ो प्रस्ताव'का अनुमोदन किया। अपने भारत छोड़ो भाषणमें, महात्मा गांधी ने कहा कि आगामी आंदोलन स्वतंत्रता के लिए अंतिम संघर्ष होगा। गांधीजी ने इस दिन 'करो या मरो'का आह्वान किया। इस अगस्त आंदोलन में पश्चिम बंगाल के मिदनापुर जिले की भागीदारी विशेष रूप से महत्वपूर्ण थी क्योंकि इस जिले के तामलुक उपविभाग में कठोर ब्रिटिश नियंत्रण के खिलाफ एक समानांतर नागरिक प्रशासनिक प्रणाली विकसित की गई थी, जिसके परिणामस्वरूप स्वशासन हुआ। मातंगिनी हाजरा गांधीजी के आह्वान पर मुक्ति आंदोलन में शामिल हुईं। उन्होंने १९३२ में सविनय अवज्ञा आंदोलन में भाग लिया और नमक अधिनियम का उल्लंघन करने के लिए गिरफ्तार हुईं।

अध्ययन के उद्देश्य:

१. स्वतंत्रता संग्राम में बंगाल की महिलाओं की भूमिका की जांच करना।

२. मातंगिनी हाजरा के प्रारंभिक जीवन और पृष्ठभूमि का पता लगाना।
३. भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में मातंगिनी हाजरा की भागीदारी का विश्लेषण करना।
४. सविनय अवज्ञा और अहिंसक प्रतिरोध में मातंगिनी हाजराजी के योगदान की जांच करना।
५. स्वतंत्रता संग्राम पर मातंगिनी हाजराजी के बलिदान के प्रभाव का आकलन करना।
६. भारत की स्वतंत्रता में मातंगिनी हाजराजी की भूमिका के ऐतिहासिक महत्व का मूल्यांकन करना।

प्रारंभिक जीवन और पृष्ठभूमि:

जन्म और बचपन :

मातंगिनी हाजरा, भारत के स्वतंत्रता संग्राम के उथल-पुथल भरे दौर में लचीलेपन की एक मिसाल थीं, जिनका जन्म १९ अक्टूबर, १८६९ को पश्चिम बंगाल में तामलुक के पास होगला के सुरम्य गांव में हुआ। ग्रामीण जीवन की लय में बंधे परिवार में जन्मी, मातंगिनी के शुरुआती साल एक संयुक्त परिवार के ढांचे के गर्मजोशी भरे आलिंगन में बीते। अपने सामुदायिक जीवन और साझा जिम्मेदारियों के साथ यह गांव १९वीं सदी के उत्तरार्ध के भारत में जीवन का एक सूक्ष्म जगत बन गया। उनके माता-पिता, अपने कृषि समकक्षों की तरह, खेतों में काम करते थे, जीविका के लिए प्रकृति से समझौता करते थे। इन प्रारंभिक वर्षों में, जहाँ होगला के हरे-भरे खेत और सामुदायिक भावनाएँ उनके खेल का मैदान थीं, मातंगिनी ने एक अतृप्त जिज्ञासा विकसित की। हालाँकि, शिक्षा एक ऐसी विलासिता थी जिसकी आपूर्ति कम थी। औपचारिक शैक्षणिक संस्थानों की कमी वाला गाँव उनका पहला स्कूल बन गया, और दैनिक जीवन के अनुभव - चाहे खेतों में हों या घनिष्ठ समुदाय के बीच - ने उनके विश्वदृष्टिकोण को आकार दिया। ग्रामीण जीवन की लय, रोपण के मौसम से लेकर फसल उत्सव तक, मातंगिनी की प्रारंभिक शिक्षा बन गई। उनका बचपन मौसम के उतार-चढ़ाव में डूबा हुआ था, जहाँ उन्होंने न केवल जीवित रहने के लिए आवश्यक कौशल सीखे, बल्कि अपनी चेतना पर समुदाय, सहयोग और लचीलेपन के मूल्यों को भी अंकित किया। औपचारिक स्कूली शिक्षा की कमी ने उनकी बौद्धिक जिज्ञासा को बाधित नहीं किया, और गाँव के बुजुर्ग ज्ञान के अनौपचारिक संरक्षक बन गए, कहानियों, परंपराओं और सामूहिक पहचान की भावना को आगे बढ़ाया।

विवाह और पारिवारिक जीवन :

मातंगिनी की कहानी ने त्रिलोचन हाजरा से कम उम्र में विवाह के साथ एक अपरिहार्य मोड़ लिया। होगला के ग्रामीण शांत वातावरण से तामलुक के हलचल भरे शहर में जाने से चुनौतियाँ और अवसर दोनों सामने आए। हाजरा परिवार के भीतर, मातंगिनी को एक संयुक्त परिवार संरचना का सामना करना पड़ा। दैनिक जीवन की लय परंपरा के धागों से बुनी गई थी, और लिंग भूमिकाएँ अक्सर पूर्वनिर्धारित थीं। हालाँकि इस सामाजिक ढाँचे के भीतर भी, मातंगिनी ने एक ऐसी भावना का प्रदर्शन करना शुरू कर दिया, जो सीमित होने से इनकार करती थी। एक बहू और अंततः एक माँ के रूप में उनके अनुभवों ने उनके भविष्य के प्रयासों के लिए आधार तैयार किया। जबकि सामाजिक मानदंड कुछ भूमिकाओं को निर्धारित करते थे, मातंगिनी की स्वतंत्रता की भावना ने बातचीत करने, एजेंसी का दावा करने और परंपरा द्वारा निर्धारित सीमाओं को सूक्ष्मता से चुनौती देने के छोटे-छोटे कार्यों में अभिव्यक्ति पाई। इस प्रकार, मातंगिनी हाजरा का प्रारंभिक जीवन न केवल एक व्यक्तिगत वृत्तांत बन जाता है, बल्कि १९वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में ग्रामीण बंगाल के व्यापक सामाजिक-सांस्कृतिक परिदृश्य का प्रतिबिंब बन जाता है। होगला में एक ग्रामीण लड़की से लेकर तामलुक में पारिवारिक अपेक्षाओं की जटिलताओं को पार करने वाली महिला तक के उनके सफर ने एक ऐसे जीवन की नींव रखी जो बाद में भारत की स्वतंत्रता की खोज की अदम्य भावना का पर्याय बन गया।

मातंगिनी हाजरा और भारत का स्वतंत्रता आंदोलन :

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में मातंगिनी की भागीदारी:

जब मिदनापुर (बंगाल) में स्वदेशी आंदोलन चरम पर था, उस आंदोलन में कई महिलाओं ने भी भाग लिया और यह राष्ट्रीय संघर्ष में महिलाओं की भागीदारी का पहला मोड़ था। वे महात्मा गांधी के सिद्धांतों से बहुत प्रभावित थीं। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलनों के प्रभाव में, २६ जनवरी, १९३२ को लोगों ने ब्रिटिश सरकार के अधीन अपने देश की स्थिति को देखने के

लिए पूरे देश में परेड निकाली। जब इस परेड में मिदनापुर की सड़कों से इतने सारे लोग शामिल हुए, तो यह पहला आंदोलन था जिसने मातंगिनी को अपने देश के लिए लड़ने के लिए प्रेरित किया।

कारावास और दमन :

१९३२ में उन्होंने मिदनापुर में 'सविनय अवज्ञा आंदोलन' में भाग लिया। उन्होंने महात्मा गांधी के नेतृत्व में दांडी मार्च में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। नमक सत्याग्रह आंदोलन में भाग लेने के कारण उन्हें ब्रिटिश पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया था। अपनी रिहाई के बाद, उन्होंने १९३३ में तिरंगा झंडा थामे चौकीदारी कर बंद मार्च में भाग लिया। वह उस मार्च में अंग्रेजों के खिलाफ जमकर नारे लगा रही थीं, और इसके लिए उन्हें पुलिस ने पीटा और गंभीर रूप से घायल कर दिया; बाद में उन्हें फिर से गिरफ्तार कर लिया गया। उन्हें बहरामपुर में छह महीने तक कैद रखा गया था।

१९४२ की घटना :

जेल से दूसरी बार रिहा होने के बाद, वह अपने आदर्श महात्मा गांधी का अनुसरण करने के लिए सक्रिय रूप से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल हो गईं।१९४२ में, वह भारत छोड़ो आंदोलन का हिस्सा बन गईं, राष्ट्रीय कांग्रेस समिति के सदस्यों ने उन सभी पुलिस स्टेशनों और सरकारी कार्यालयों को अपने नियंत्रण में लेने का फैसला किया, जो अंग्रेजों द्वारा चलाए और प्रशासित थे। जल्द ही यह एक अधिनियम बन गया और मिदनापुर जिले में, एक स्वतंत्र भारतीय राज्य की स्थापना के लिए, ७२ वर्षीय मातंगिनी हाजरा ने ६००० लोगों के साथ एक परेड का नेतृत्व किया, जो तामलुक पुलिस स्टेशन पर कब्जा करने के लिए मार्च-पास्ट कर रहे थे। जब यह परेड समूह शहर में पहुंचा, तो क्राउन पुलिस ने उन्हें भारतीय दंड संहिता की धारा १४४ के तहत भीड़ को तितर-बितर करने का आदेश दिया, लेकिन समूह की प्रमुख, मातंगिनी हाजरा आगे बढ़ीं। जैसे ही वह आगे बढ़ीं, पुलिस ने उन्हें एक गोली मार दी। अपने हाथ में तिरंगा झंडा लिए हुए, वह बिना किसी हिचकिचाहट के पुलिस से अपील करती हैं, "भीड़ पर गोली न चलाएं"। वह भी नारा लगाती रहीं: "वंदे मातरम", लेकिन उन्हें लगातार तीन बार गोली मारी गई; बाद में वह वहीं गिर गईं और उनकी मृत्यु हो गई। ७२ वर्ष की आयु में उनके हाथ में भारतीय राष्ट्रीय ध्वज थामे हुए ही उनकी मृत्यु हो गई।

सामाजिक कार्य:

अपनी स्वतंत्रता संग्राम के अलावा, मातंगिनी ने छह महिने की जेल के बाद अछूतों की मदद करना शुरू कर दिया। उन्होंने चेचक से पीड़ित लोगों की भी मदद की, जो मिदनापुर के क्षेत्र में व्यापक रूप से फैल गया था।

निष्कर्ष :

१. भारत के स्वतंत्रता संग्राम की गुमनाम नायिका मातंगिनी हाजराजी इतिहास के पन्नों से एक ऐसी शख्सियत के रूप में उभरी हैं, जिनके जीवन में त्याग, दृढ़ता और स्वतंत्रता के लिए अटूट प्रतिबद्धता की भावना समाहित थी।
२. महात्मा गांधी जैसी हस्तियों के नेतृत्व में स्वतंत्रता संग्राम के प्रभाव ने मातंगिनी की अंतरात्मा को झकझोर दिया। अहिंसक प्रतिरोध और सविनय अवज्ञा के आदर्शों के साथ उनका जुड़ाव केवल एक राजनीतिक विकल्प नहीं था, बल्कि एक नैतिक प्रतिबद्धता थी।
३. सविनय अवज्ञा आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन में उनकी सक्रिय भागीदारी उपनिवेशवाद की दमनकारी संरचनाओं को चुनौती देने के लिए समर्पित जीवन के अध्याय थे।
४. मातंगिनी हाजराजी की भागीदारी स्वराज और सत्याग्रह के सिद्धांतों में उनकी गहरी आस्था का प्रमाण था।
५. मातंगिनी हाजराजी द्वारा किए गए बलिदानों ने एक सच्चे देशभक्त के रूप में उनकी भूमिका को रेखांकित किया।
६. अंग्रेज प्रशासन के जेलों की कठोर परिस्थितियाँ, शारीरिक कष्ट और दमन का निरंतर खतरा उनके हौसले को तोड़ने में विफल रहा। स्वतंत्र भारत के लिए कारावास सहने की उनकी इच्छा ब्रिटिश राज की जेलों में बंद अनगिनत अन्य लोगों द्वारा किए गए बलिदानों का प्रतीक बन गई।

७. मातंगिनी हाजराजी अपनी उम्र और शारीरिक जोखिमों के बावजूद स्वतंत्रता के लिए उनकी अटूट प्रतिबद्धता, भारतीयों की पीढ़ियों को प्रेरित करती रहेगी।
८. वह उत्पीड़न और अन्याय के खिलाफ लढाई में साहस और दृढ़ संकल्प का एक स्थायी प्रतीक बनी हुई हैं, और उनकी विरासत उन सभी लोगों के दिलों में जीवित है जो भारत की कड़ी मेहनत से मिली स्वतंत्रता को संजोते हैं।

संदर्भ:

१. टी. मंडल (१९९१): बंगाल की महिला क्रांतिकारी, १९०५-१९३९, कलकत्ता, १९९१।
२. मैती, सचिंद्र कुमार, "मिदनापुर में स्वतंत्रता आंदोलन," खंड - I, कलकत्ता, १९७५।
३. मजूमदार, आर.सी. भारत में स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास, खंडIII, फ़िरमा के.एल. एम. प्राइवेट लिमिटेड, कलकत्ता, १९७७।
४. दास नरेंद्र, मिदनापुर का इतिहास एम खंड। मैं, मेदिनीपुर इतिहास रचना समिति, मिदनापुर, १९५६।
५. https://matanginicollege.ac.in/About-matangini.aspx
६. https://www.studocu.com/en-us/document/creighton-university/bap-political-science/research-paper-mandakini-hazre/७८०६७६९०
७. www.midnapore.in/freedomfighters/matangini_hazra.html
८. www.thehindu.com/children/unsung-heroes/article१९४६४११२.ece
९. https://www.dnaindia.com/india/video-the-unsung-heroes-leaders-who-played-an-important-role-in-india-s-freedom-struggle-२५३०४६४